अमर चित्र कथा

कार्त्तिकेय

संख्या ५२१

₹१०



अमर चित्र कथा

तलाश अपनी जड़ों की

कार्त्तिकेय

देवताओं के सेनापति कार्त्तिकेय को सुब्रह्मण्य, स्कन्द, गुह और कुमार के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण भारत में सुब्रह्मण्य आज भी लोकप्रिय देवता हैं। यद्यपि उत्तर भारत में कार्त्तिकेय उतने विख्यात नहीं हैं, फिर भी पूर्वी भारत, विशेषतः बंगाल में स्त्रियों द्वारा उनकी पूजा श्रेष्ठ पुत्रों की प्राप्ति की कामना से की जाती है। गणेश की भाँति वे भी शिव और पार्वती के चमत्कारिक रूप से जन्मे पुत्र हैं। जहाँ गणेश की सृष्टि पार्वती के हाथों हुई थी, कार्त्तिकेय की उत्पत्ति शिवजी द्वारा हुई। बारी-बारी से अग्नि, गंगा और कृत्तिकाओं ने उनका पोषण किया था।

छह सिर और बारह हाथोंवाले, अपने वाहन, मोर पर आसीन, कार्त्तिकेय सौंदर्य, यौवन और पराक्रम के प्रतीक हैं। वे अन्याय और अनाचार के संहारक माने जाते हैं।

वैसे तो कार्त्तिकेय को ब्रह्मचारी माना गया है, किंतु कुछ उन्हें वल्ली और देवसेना-दो पत्नियों का स्वामी मानते हैं।

कार्त्तिकेय का उल्लेख महाभारत और रामायण के अतिरिक्त शिव, स्कन्द और ब्रह्माण्ड पुराण में भी मिलता है। यह अमर चित्र कथा स्कन्द-पुराण-संहिता के तमिल संस्करण पर आधारित है।

Editor : Anant Pai
Script : Pradeep Bhattacharya & Meera Ugra   Illustrations : C.M. Vitankar
Cover : C.M. Vitankar

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-264-9
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India



कार्त्तिकेय
प्राचीन काल में देवताओं और असुरों में सदा युद्ध होते रहते थे। इनमें अक्सर असुरों की हार होती थी।
एक करारी हार के बाद असुरों के एक राजा अरिक्स्सेन ने अपनी जादूगरनी बेटी, माया से कहा—
देवता फिर जीत गये। हमारा घोर अपमान है यह!
चिन्ता न करें, पिताजी। जब तक मैं देवताओं से बदला न ले लूँगी, चैन नहीं लूँगी।
एक सुन्दरी युवती का रूप धर कर माया वन में तपस्या में लीन कस्यप मुनि के पास गयी।
इन मुनिराज से विवाह कर मैं ऐसे बच्चों को जन्म दूँगी जो देवताओं से कहीं अधिक शक्तिशाली होंगे।



जादू के जोर से चारों ओर मनोहर बगीचा बना कर वह मधुर स्वर में गाने और नाचने लगी ...
... आखिर महर्षि की आँख खुली ।
कृपया मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कीजिए, महात्मन् ।
भला मैं तुम्हारी प्रार्थना कैसे ठुकरा सकता हूँ, सुन्दरी?
कश्यप मुनि और असुर राजकुमारी वन में सुखपूर्वक रहे । समय बीतने पर एक पुत्र का जन्म हुआ ।
मेरे बलवान सूरपद्म, तुम तीनों लोकों के स्वामी बनोगे।
बाद में माया के दो पुत्र और हुए, जिनके नाम उसने सिंहमुख और तारकासुर रखे ।
मुझे उस दिन की बेचैनी से प्रतीक्षा है जब तुम देवताओं को पराजित कर के उन्हें अपना दास बनाओगे ।
धर्मात्मा महर्षि माया के इरादों से बेखबर थे।


अतः जब बच्चे बड़े हुए —
मैं तपस्या करने जा रहा हूँ, पुत्रो। अपनी माँ का ध्यान रखना। हमेशा सदाचारी जीवन बिताना और प्रभु की भक्ति करना।
यही समय है। भगवान शिव जी को प्रसन्न कर उनसे अजेय होने का वर प्राप्त करो।
जो आज्ञा, माँ।
वे तीनों घर छोड़ कर चले गये। और शिव जी को प्रसन्न करने के लिए घोर तप में लीन हो गये।
किन्तु उनकी कोशिशें सफल नहीं हुईं। इसलिए उनमें सबसे बड़ा, सुरपद्म, यज्ञ की अग्नि में कूद गया।
किन्तु अगले क्षण ही स्वयं शिव जी ने उसे अग्नि से बचा लिया।
अपनी बलि क्यों दे रहे हो?
प्रभु, मैं सारे जगत का अधिपति बनना चाहता हूँ। मुझे ऐसा शरीर चाहिए, जो कभी नष्ट न हो।

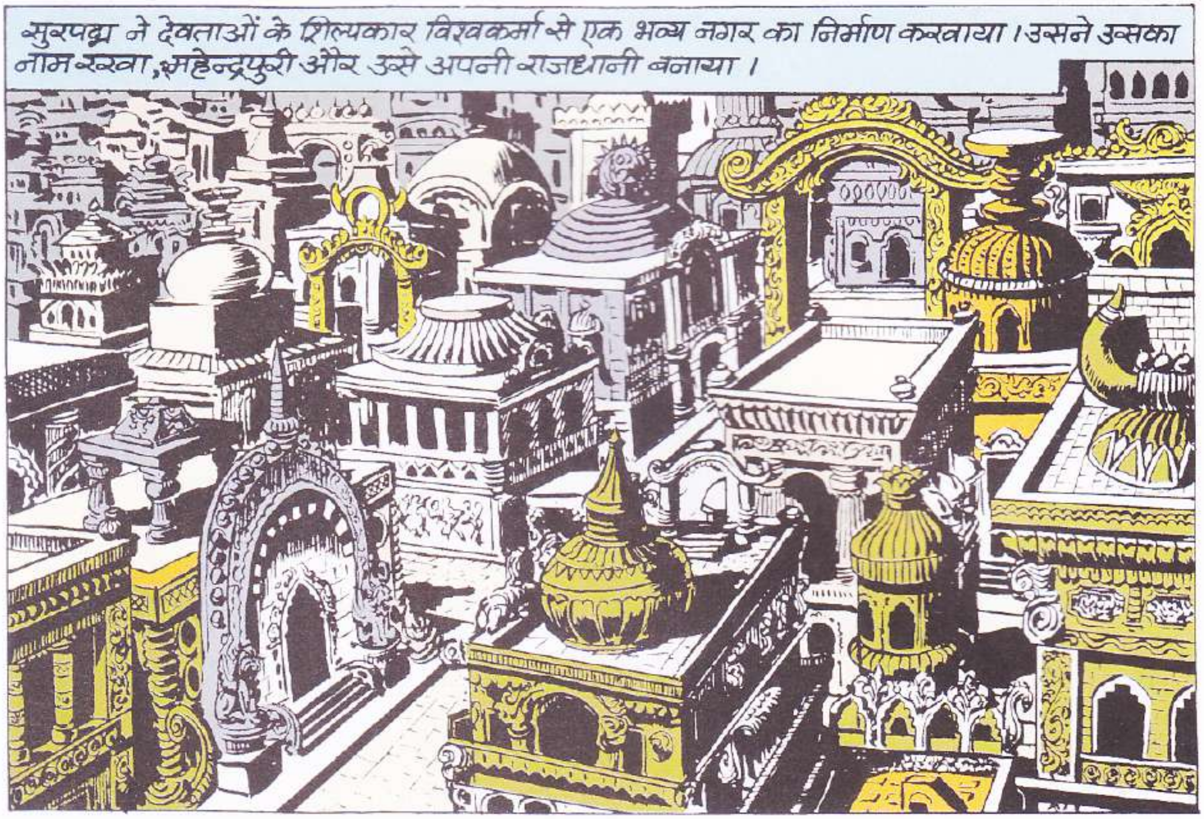

अमर शरीर किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकता। किन्तु तुम अजेय रहोगे और लम्बे समय तक सम्पूर्ण जगत का शासन करोगे।


तुम्हें मेरी शक्ति के अतिरिक्त कोई भी हरा नहीं पायेगा।


अपनी सफलता के मद में चूर तीनों भाई घर लौटे और अपनी माँ को शिवजी के वरदान की बात बतायी।
अब मेरे सपने साकार होंगे।
हाँ, अब हमें किसी का कोई भय नहीं है। हम शीघ्र ही देवताओं को स्वर्ग से निकाल बाहर करेंगे।


और फिर एक के बाद दूसरे देश जीतते हुए ...


... वे देवलोक पहुँचे । वहाँ घमासान युद्ध में उन्होंने देवताओं के छक्के छुड़ा दिये ...
...और उन्हें बन्दी बना लिया ।
बाद में —
हा! हा! कहो, देवराज इन्द्र, बन्दी बन कर कैसा लग रहा है ?
और क्या वह वायु है ? अभी तो इसकी हवा बिगड़ी हुई दिख रही है !
इनका क्या किया जाये, भैया ?
हम इन्हें अपना दास बनायेंगे । इन्द्र हमारा मछुआरा बनेगा, वायु हमारा झाड़ूवाला और ...
... सूर्य हमारे बच्चों के खेलने के लिए बढ़िया गेंद ।
विचार अच्छा है ! हा हा हा !


सुरपद्म ने देवताओं के शिल्पकार विश्वकर्मा से एक भव्य नगर का निर्माण करवाया। उसने उसका नाम रखा, महेन्द्रपुरी और उसे अपनी राजधानी बनाया।


उधर देवता अपने भाग्य को कोस रहे थे।
उन्होंने वीर जयन्त* को भी बन्दी बना लिया। हम करें भी क्या?
आखिर कब तक हम यह अपमान सहते रहेंगे?


शिव जी ने हमें सहायता का वचन दिया था।
वह काफी समय पहले की बात है।


चलो, एक बार फिर कैलास चलकर शिव जी की प्रार्थना करते हैं।
क्या तुम भूल गये कि पिछली बार हम जब कैलास गये थे, तो कामदेव की क्या गति हुई थी ?
प्रेम के देवता कामदेव ने जब शिव की तपस्या में बाधा डाली थी तो उसे भस्म होना पड़ा था। यद्यपि बाद में उसे जीवन मिल गया था।

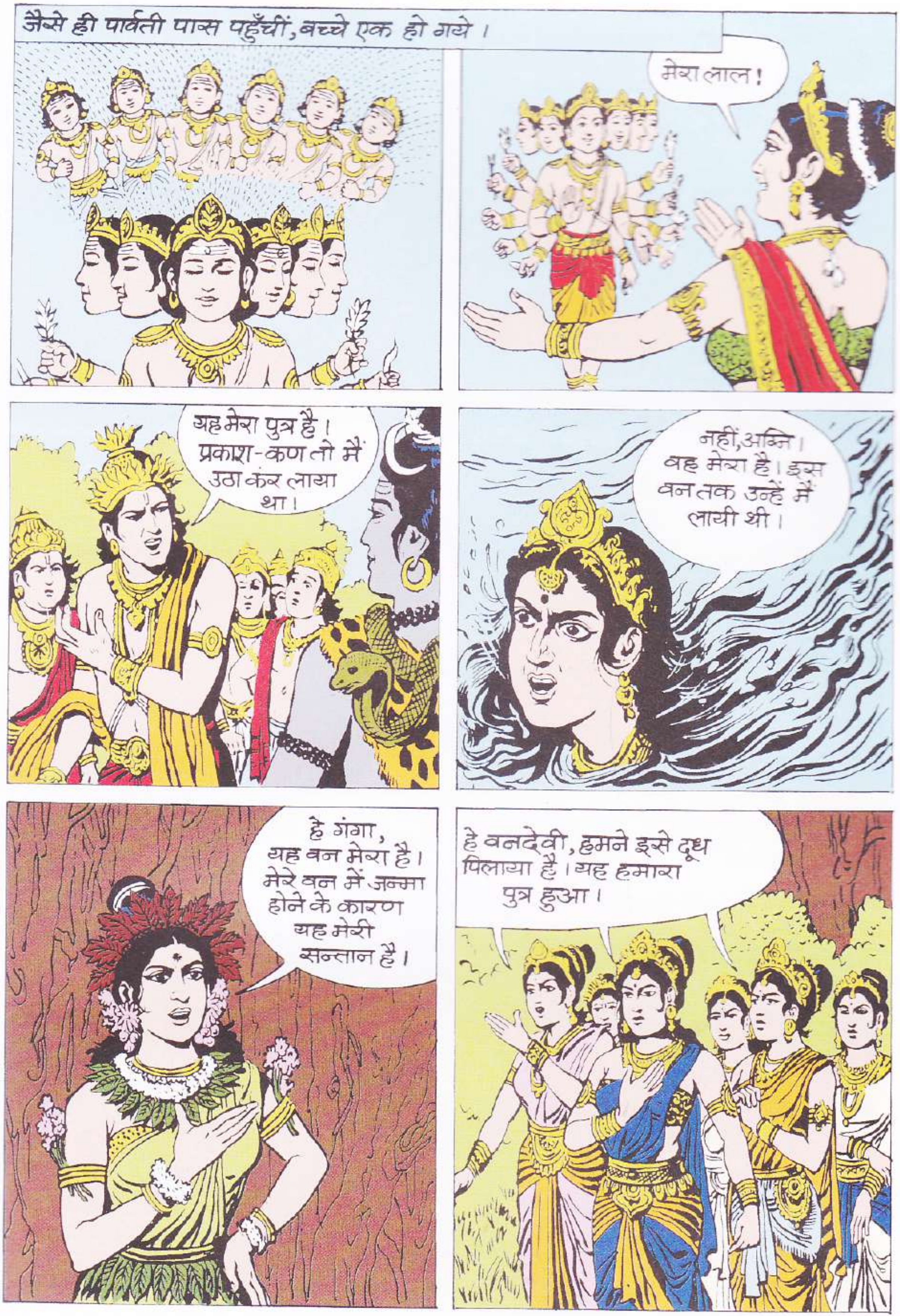

पार्वती से विवाह होने के बाद शिव अब अधिक दयालु हो गये हैं। वे अवश्य हमारी विनती सुनेंगे।
अच्छा, चलो, एक बार फिर कैलास चलें।


कैलास में –
हे प्रभु, शक्ति के गर्व से चूर दुष्ट असुरों ने हम लोगों को दास बना लिया है। मेरे पुत्र, जयन्त को उसने कारागार में रख छोड़ा है।
धैर्य रखो! तुम्हारे कष्ट जल्दी दूर होंगे। उनके दिन अब गिने चुने रह गये हैं।

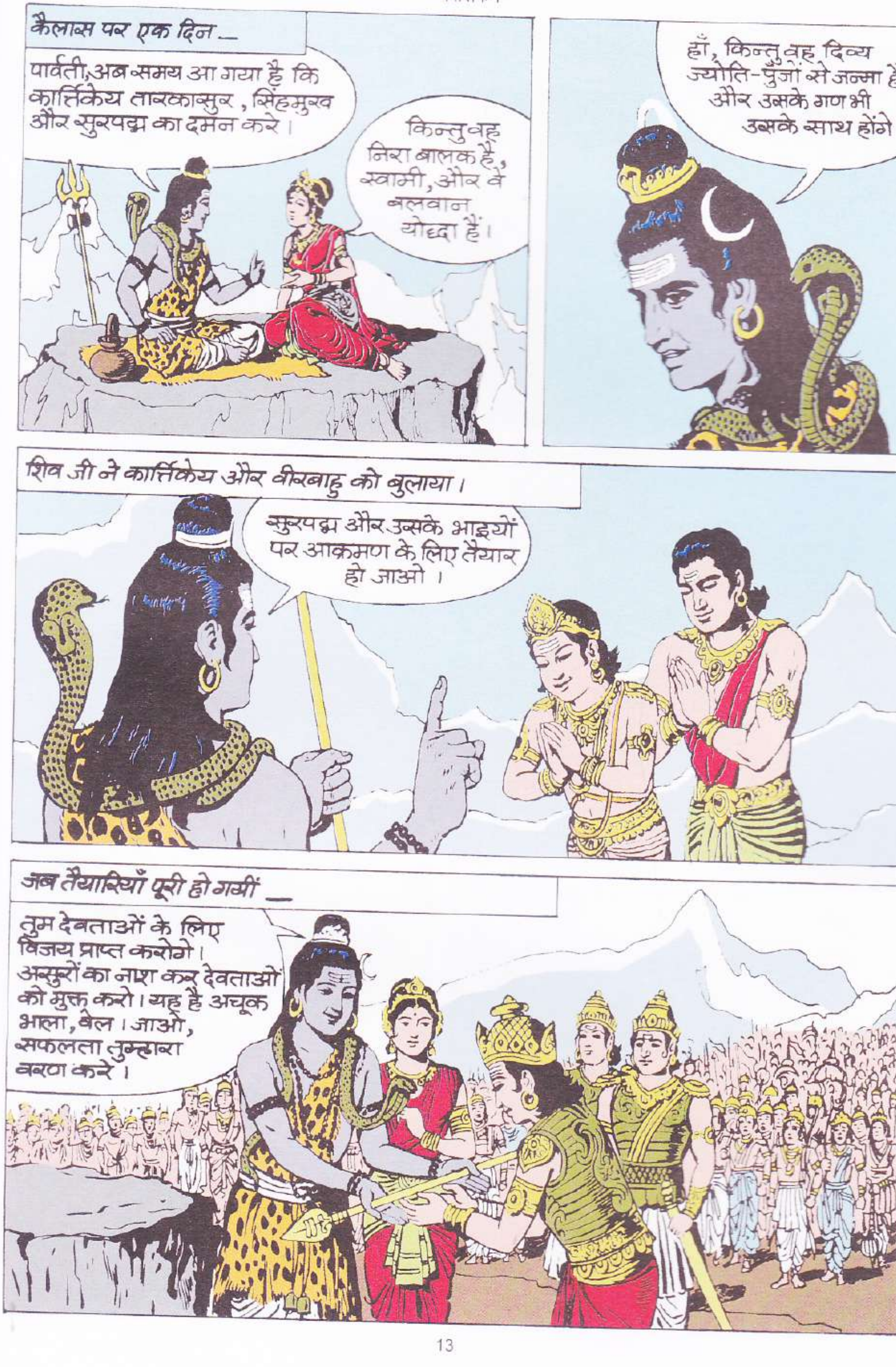

तब शिव जी ने छह मुखोंवाला स्वरूप धारण किया ...
जिससे छह दिव्य चिनगारियाँ छूटीं ...
जिनके प्रकाश से देवताओं की आँखें चौंधिया गयीं ।
इन चिनगारियों से जन्मा बालक असुरों का सर्वनाश करेगा।
तब शिवजी अपने सामान्य स्वरूप में आ गये ।
वायु, तुम और अग्नि मिल कर इन चिनगारियों को गंगा के पास ले जाओ। वह इन्हें उदय पर्वत पर स्थित शरवन में ले आयेगी।


अग्नि और वायु प्रकाश-कण ले कर उड़ चले ...
... गंगा के पास–
शिव जी की आज्ञा है कि तुम इन्हें उदय पर्वत पर स्थित शरवन में ले जाओ।
जब गंगा उन्हें ले कर शरवन में पहुँची ...
... वे चिनगारियाँ छह बच्चों में परिवर्तित हो गयीं !


तभी छह कृत्तिका नामक अप्सराएँ वहाँ पहुँचीं ।
नवजात शिशु ! ये भी छह हैं !
हम सबके लिए एक-एक !
कृत्तिकाएँ बच्चों को दुलारने लगीं ।
देवता भी कुछ देर बाद वहाँ आ पहुँचे ।
देखो ! शिशु ...
आपका आशय शिशुओं से है !
फिर शिव और पार्वती भी पहुँच गये ।
शिव जी की सन्तान ! मेरे बच्चे !


जैसे ही पार्वती पास पहुँचीं, बच्चे एक हो गये ।
मेरा लाल !
यह मेरा पुत्र है । प्रकाश-कण तो मैं उठा कर लाया था ।
नहीं, अग्नि । वह मेरा है । इस वन तक उन्हें मैं लायी थी ।
हे गंगा, यह वन मेरा है । मेरे वन में जन्मा होने के कारण यह मेरी सन्तान है ।
हे वनदेवी, हमने इसे दूध पिलाया है । यह हमारा पुत्र हुआ ।


शान्ति ! शान्ति ! पार्वती-पुत्र होने के कारण इसका नाम होगा, स्कन्द। शरवण नाम होगा वनदेवी का पुत्र होने के कारण। कृत्तिकाओं द्वारा पाले जाने के कारण यह कार्त्तिकेय कहलायेगा। गंगा का पुत्र, कुमार, अग्नि का महासेन और मेरा, गुह; सभी इसके नाम होंगे।
मैं छह सिरवाले बालक का पोषण कैसे करूँगी ?
अगले क्षण —
मेरा लाल !
कार्तिकेय का स्वरूप अब साधारण बच्चों जैसा था।
शीघ्र ही झील में से नौ दिव्य प्राणी निकले।
वे तुम्हारे गण हैं, वीरबाहु और उसके साथी।
तब देवताओं ने कार्तिकेय स्वामी की स्तुति की ...
... और फिर शिव जी कार्तिकेय को अपने धाम, कैलास पर्वत पर ले गये।


कैलास पर एक दिन _
पार्वती, अब समय आ गया है कि कार्त्तिकेय तारकासुर, सिंहमुख और सुरपद्म का दमन करे।
किन्तु वह निरा बालक है, स्वामी, और वे बलवान योद्धा हैं।
हाँ, किन्तु वह दिव्य ज्योति-पुंज से जन्मा है। और उसके गण भी उसके साथ होंगे।
शिव जी ने कार्त्तिकेय और वीरबाहु को बुलाया।
सुरपद्म और उसके भाइयों पर आक्रमण के लिए तैयार हो जाओ।
जब तैयारियाँ पूरी हो गयीं _
तुम देवताओं के लिए विजय प्राप्त करोगे। असुरों का नाश कर देवताओं को मुक्त करो। यह है अचूक भाला, वेल। जाओ, सफलता तुम्हारा वरण करे।



वेल भाले से लैस हो कार्त्तिकेय असुरों से भिड़ने चल दिये।
कुछ दूर जाने पर —
तुझे आगे बढ़ने से पहले मुझसे निपटना होगा, छोकरे।
यह था पर्वत का रूप धरे असुर, क्रौंच।
बिना कुछ बोले कार्त्तिकेय ने भाला उठाया...
...और क्रौंच का काम तमाम कर दिया।


जब तारकासुर को यह समाचार मिला —
क्रौंच का वध? एक अबोध बालक द्वारा?
अच्छा, चलो, मैं चल कर उसकी शक्ति परखता हूँ।
जब वह कार्त्तिकेय के सामने पहुँचा —
अपने शस्त्रों का दुरुपयोग न करो। देवताओं को मुक्त कर दो, तो तुम और तुम्हारे भाई क्षमा कर दिये जायेंगे।
तेरी यह हिम्मत! ढीठ बालक! भाग जा यहाँ से ...
...वर्ना तेरे प्राण ले लूँगा!
भगवान शिव की जय!



शिव का दिया हुआ यह अस्त्र कभी खाली नहीं जाता !
तुमने अपने सब शस्त्र चला कर देख लिये। अब मुझे अपना अस्त्र चलाने दो ।
कार्त्तिकेय का भाला अपने निशाने पर लगा ।
तारकासुर मारा गया !
कार्त्तिकेय की जय !


बाद में _
वीरबाहु, हो सकता है, कि तारकासुर की मृत्यु से उसके भाइयों को सुबुद्धि आ गयी हो। मेरे दूत बनकर जाओ, और सुरपद्म से कहो कि देवताओं को त्रास देना बन्द करे।
जो आज्ञा, प्रभु।
जब वीरबाहु सुरपद्म की राजधानी, महेन्द्रपुरी पहुँचा _
सुरपद्म के पास जाने के पहले जयन्त से मिल लेता हूँ।
उसने एक छोटे-से पतंगे का रूप धरा...
...और नगर में प्रवेश किया।
कारागार में _
जयन्त, तारकासुर का अंत हो गया। कार्त्तिकेय स्वामी शीघ्र ही तुम्हें मुक्त कराएँगे।


तब वह उड़ कर सुरपद्म के दरबार में पहुँचा ।
अब मैं अपना स्वरूप धारण करता हूँ । क्या सुरपद्म मुझे बैठने को आसन देगा ?
अगले क्षण ही —
मेरे लिए सिंहासन! अवश्य ही यह प्रभु कार्तिकेय का चमत्कार है ।
तुम... तुम कौन हो ?
मैं कार्त्तिकेय प्रभु का दूत हूँ ।
कार्त्तिकेय! मेरे भाई का हत्यारा!


हाँ, वही। कार्त्तिकेय स्वामी की इच्छा है कि तुम जयन्त को छोड़ दो। और देवताओं को सताना बन्द कर दो, अन्यथा...
... तुम्हारी भी वही गति होगी जो तुम्हारे भाई की हुई!
एक मामूली छोकरा मुझे धमकी देता है! मैं... मैं...
वह कहाँ चला गया?
वह अदृश्य हो गया!
क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया। तब सिंहमुख ने कहा —
मेरा विचार है कि कार्त्तिकेय साधारण बालक नहीं है।


सोचो तो सही - क्रौंच... फिर तारकासुर... हम देवताओं को ...
सिंहमुख!
कायर! बस एक शब्द भी न निकालना!
भैया, यह भाग्य का खेल है कि प्रायः बुद्धिमानी को कायरता समझ लिया जाता है।
मैंने अपने विचार प्रकट कर अपना कर्त्तव्य निभाया। अब अन्तिम निर्णय आपके हाथों में है। मैं उसे सिर आँखों पर उठाऊँगा।
हम उस हठी बालक से युद्ध कर के रहेंगे!

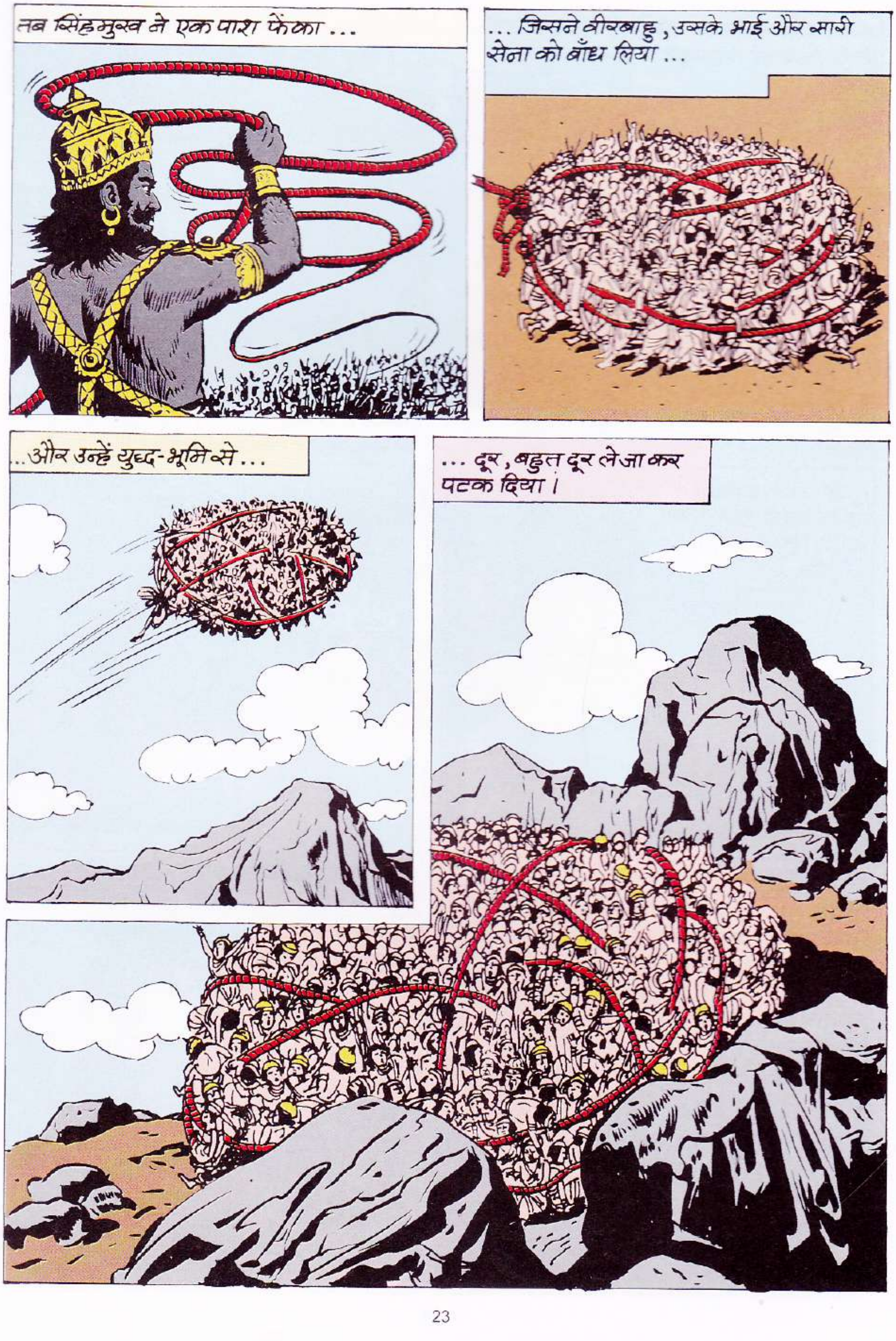

उधर वीरबाहु कार्त्तिकेय के पास पहुँचा।
कोई लाभ नहीं हुआ। सुरपद्म मुझे भी कैद करना चाहता था।
ठीक है। हम अब उससे युद्धभूमि में मिलेंगे। महेन्द्रपुरी की ओर कूच की तैयारी करो।
जब कार्त्तिकेय की सेना महेन्द्रपुरी की सीमा पर पहुँची, सुरपद्म ने अपने पुत्र बानुकोपन को उनका दमन करने भेजा।
बानुकोपन देवताओं की सेना पर टूट पड़ा।
युद्ध के दूसरे दिन _
आओ, बानुकोपन। आज तुम जीवित वापस नहीं लौटोगे।
हाँ, तुम सबको चुन-चुन कर मारने के पहले तो कदापि नहीं।


वीरबाहु उसकी ओर झपटा और दोनों में डट कर मुकाबला हुआ।


आखिरकार बानुकोपन धराशायी हुआ, और असुर मैदान छोड़ भाग खड़े हुए।


बानुकोपन की मृत्यु से सुरपद्म को भारी धक्का लगा।
सिंहमुख, हमारी रक्षा करो!
मैं भरसक प्रयत्न करूँगा, भैया!

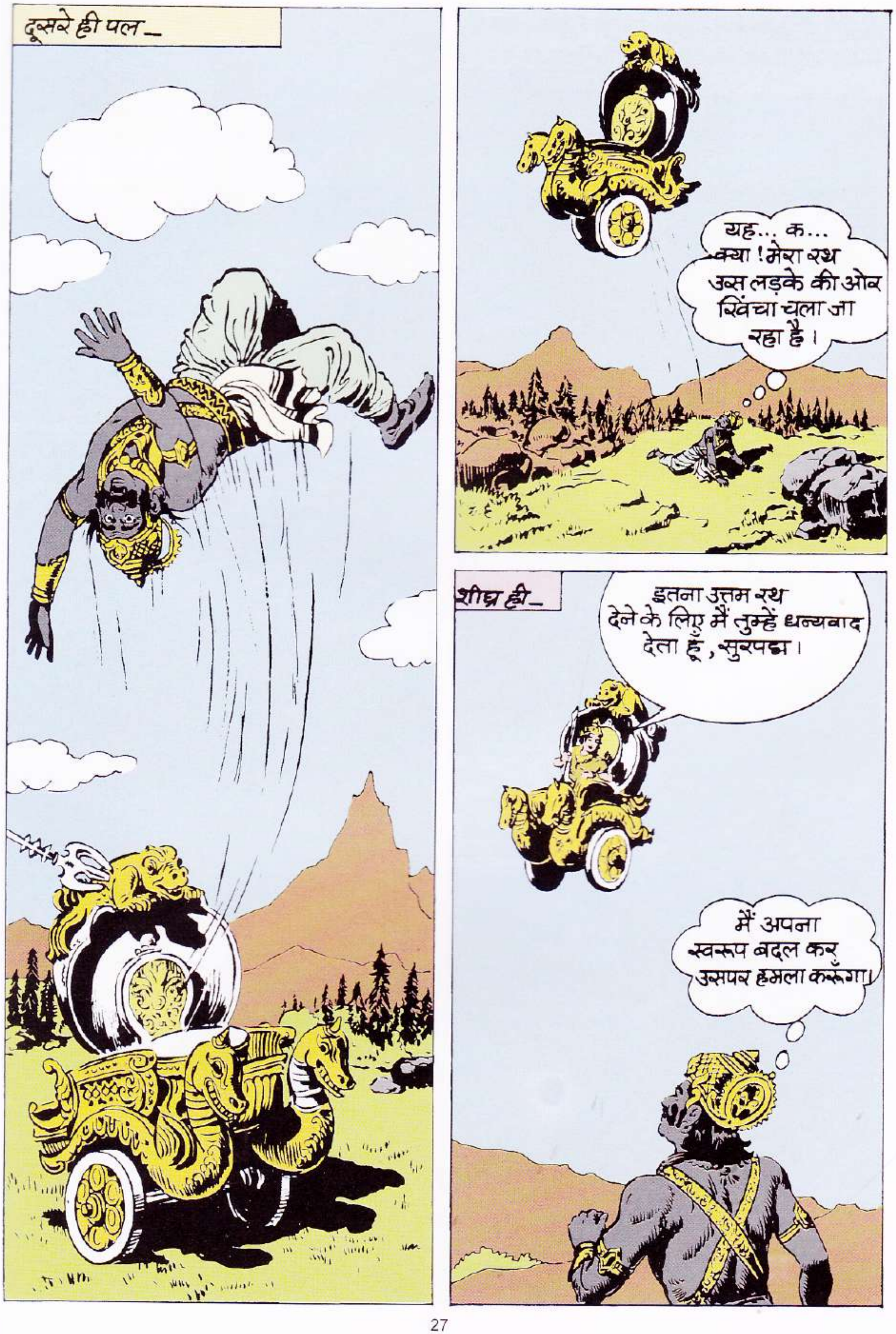

अगले दिन सिंहमुख ने देवताओं की सेना के विरुद्ध आक्रमण का नेतृत्व किया। उसके आक्रमण से देव-सेना के पैर उखड़ने लगे।


तब सिंहमुख ने एक पाश फेंका ...
... जिसने वीरबाहु, उसके भाई और सारी सेना को बाँध लिया ...
...और उन्हें युद्ध-भूमि से ...
... दूर, बहुत दूर ले जा कर पटक दिया।


इसबीच कार्तिकेय ने भी ऐसी बहुत सी शक्तियाँ फेंकीं जिससे सिंहमुख का वार काटा जा सके ।
शीघ्र ही _
तब कार्तिकेय ने सिंहमुख की ओर ध्यान दिया ।
तुम्हें अपनी शक्तियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। तुम्हें चाहिए कि ...
तू यहाँ युद्ध करने आया है, या उपदेश देने ?
दोनों में घोर संघर्ष हुआ । फिर कार्तिकेय ने सिंहमुख पर इन्द्रायुध फेंका ।
जब सिंहमुख घायल हो गिरा _
आपके अस्त्र ने मेरा अहंकार चूर कर दिया, भगवन् । मुझे आपके तेजोमय रूप के दर्शन हुए। मुझे आशीर्वाद दीजिए।
करुणामय कार्तिकेय ने सिंहमुख को आशीष दी ।
तुम भगवती काली के वाहन बनोगे ।


तब अगले दिन स्वयं सुरपद्म युद्धक्षेत्र में आया।
हमें कार्त्तिकेय को हराना ही होगा! आज अपना पराक्रम दिखा दो सबको!
जब वह कार्तिकेय स्वामी के सामने पहुँचा —
क्षमा या सर्वनाश? क्या चाहिए?
अरे ढीठ बच्चे! मैं तुझे सदा-सदा के लिए चुप करने आया हूँ।
दोनों शत्रु भिड़ गये।
यह बच्चा उतना कच्चा नहीं है, जितना मैंने सोचा था! लड़ता तो एकदम कुशल योद्धा की तरह है।
मुझे जादू का सहारा लेना होगा। इसे हराने का यही एकमात्र उपाय है।


अगले क्षण ही सब मरे हुए असुर जीवित दिखायी देने लगे। और सुरपद्म आकाश में एक रथ पर सवार दिखा।
मेरे शूरवीर असुर फिर उठ खड़े हुए, कार्त्तिकेय! अब अपनी जान बचाओ।
यह अस्त्र तुम्हारे असुरों से निपटेगा।
और यह—तुम्हारे रथ से!


दूसरे ही पल_
यह... क... क्या ! मेरा रथ उस लड़के की ओर खिंचा चला जा रहा है।
शीघ्र ही_
इतना उत्तम रथ देने के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ, सुरपद्म।
मैं अपना स्वरूप बदल कर उसपर हमला करूँगा।


देखते ही देखते सुरपद्म ने चक्रवाकम नामक विशाल पक्षी का रूप धारण किया...
...और कार्त्तिकेय की ओर झपटा।
कार्त्तिकेय ने इन्द्र को मोर के रूप में बदल कर उसे अपना वाहन बनाया...
...और पक्षी से जूझने लगे।
किन्तु सुरपद्म ने ऐन मौके पर एक पेड़ का रूप धारण कर अपना बचाव किया।


अच्छी तरह समझ ले, मूर्ख! अन्धकार भला कभी प्रकाश के आगे छिप सका है ?
जैसे ही भाले ने पेड़ के दो टुकड़े किये, सुरपद्म फिर अपने असली स्वरूप में आ कर बच निकला।
मैं अपने शरीर के बोझ के नीचे उसे कुचल दूँगा।
सुरपद्म कार्त्तिकेय की ओर लपका।
मैं तुझे पैरों तले रौंद डालूँगा और तेरा अन्त हो जायेगा।
बिजली की गति से कार्त्तिकेय ने अपना भाला उसपर फेंका।

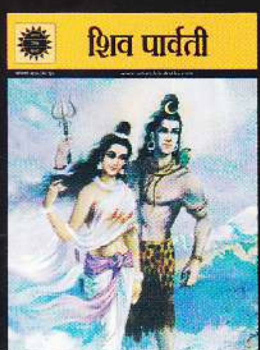

और _
आ...आ...ह
गिरते-गिरते सुरपद्म में भारी परिवर्तन आ गया ।
हे प्रभु, मुझे क्षमा कीजिए। मैं अपने पापों के लिए पश्चाताप करता हूँ। अब मैं आपकी शरण हूँ, प्रभो।
कार्तिकेय ने आहत असुर पर दया-दृष्टि डाली ।
सुरपद्म, पश्चाताप से तो बड़े से बड़े पाप भी कट जाते हैं। तुम मेरे वाहन बनोगे, और मेरी ध्वजा के चिह्न भी।
और इस प्रकार सुरपद्म ने दो रूप धारण किये_ एक तो मोर का, जो कार्त्तिकेय का वाहन बना, और दूसरा, मुर्गे का, जो उनके ध्वज-शिखर पर विराजमान हो गया।
हे कार्त्तिकेय स्वामी, आपको हमारा बारम्बार सादर प्रणाम ।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएं

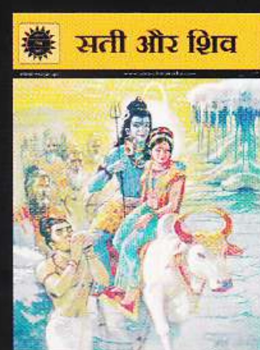
कार्त्तिकेय

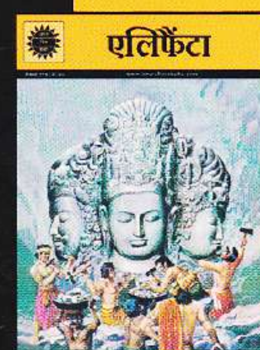
पुराणों में शिव के पुत्र कार्तिकेय का वर्णन दैवीय सेना के सेनापति के रूप में किया गया है। वे सुब्रह्मण्य, स्कंध, गुह और कुमार भी कहलाते हैं। तमिल भाषी उन्हें मुरुगन कहते हैं। मोर पर विराजमान छह सिर, बारह भुजाओं वाले कार्तिकेय यौवन, सौंदर्य, पराक्रम और कुशाग्र बुद्धि के प्रतीक हैं।

अमर चित्र कथा के अन्य महाकाव्य (वीर गाथाएं) और पौराणिक कथाएं :





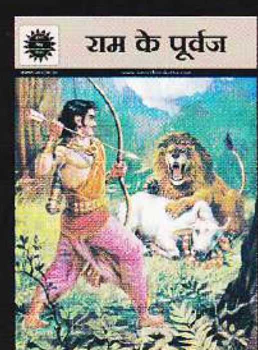




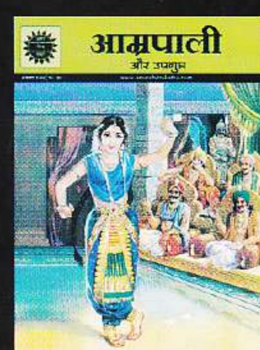
ये भी पढ़ें :



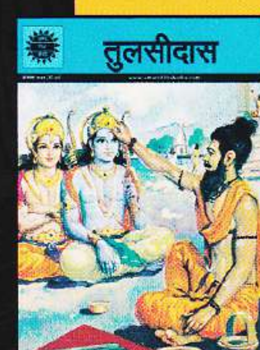
वीरांगना



भारतीय उत्कृष्ट साहित्य



हास-परिहास और दंतकथाएं



दिव्यदृष्टा

www.amarchitrakatha.c
ISBN 978-81-8482-264-
9 788184 82264